ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(4): 200-203
www.allresearchjournal.com
Received: 11-02-2020
Accepted: 15-03-2020

डां. श्रीमती संगीता सिंघल
एसोसियट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय,
मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence Author:
डां. श्रीमती संगीता सिंघल
एसोसियट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय,
मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

भूमंडलीय उश्मीकरण (ग्लोबल वार्मिंग)

डां. श्रीमती संगीता सिंघल

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2020.v6.i4c.9764

भूमिका
भूमंडलीय उश्मीकरण हमारे देष के लिए ही नहीं अपितु पूरे विष्व के लिए बहुत बड़ी समस्या है। आज मनुश्य, दिन–प्रतिदिन विकास के लिए कई तरह से प्रकृति के साथ खिलवाड कर रहा है, जिसकी वजह से प्रकृति के सन्तुलन को बनाये रखने में मुष्किल हो रही है। इन सबके कारण धरती को कई समस्याओं का सामना करना पड रहा है। जिनमें से भूमण्डलीय उश्मीकरण या ग्लोबल वार्मिंग एक बहुत ही भयंकर समस्या है। वर्तमान में भूमंडलीय तापमान में हो रही वृद्वि के लिए मानव के प्रकृति विरोधी क्रियाक्लापों को ही उत्तरदायी माना गया है। धरती के वातावरण में तापमान में लगातार हो रही विष्वव्यापी बढोत्तरी को ही ग्लोबल वार्मिंग कहते है अर्थात जब वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साईड की मात्रा बढ़ जाती है तो वायुमंडल के तापमान में बढ़ोत्तरी हो जाती है। भूमंडलीय तापमान बढ़ने का प्रमाण प्रथम बार 19वीं सदी में महसूस किया गया जब हिम पिघलने लगी। 20वीं सदी में विश्व तापमान में औसत 0.60 सेल्सियस की वृद्वि हुई। अतः आज भूमंडलीय तापमान में हो रही वृद्वि वैश्विक चिंता का विषय बन चुका है।
संयुक्त राष्ट्र महासचिव वान की मून ने इस समस्या को गम्भीरता से लेते हुए पेरिस में एक सम्मेलन में कहा था 'वैश्विक जलवायु की सुरक्षा किसी देश विशेष की समस्या नहीं, यह सम्पूर्ण विश्व की समस्या है और इसके लिए साक्षा रणनीति की आवश्यकता है।'
इन्होने एक अन्य स्थान पर यह भी कहा कि जलवायु परिवर्तन एक ऐसी समस्या है जो हमारे द्वारा विकास के लिए किए गये तमाम प्रयासों के परिणामों को उलट सकता है।

भूमंडलीय ताप में वृद्वि का अर्थ
सामान्य रूप से पृथ्वी का तापमान लगभग स्थित रहता है। यह स्थिति सूर्य से अपने वाले ऊष्मीय विकिरण तथा पृथ्वी से परावर्तित होने वाली ऊष्मा के मध्य संतुलन से बनती है। सूर्य के पृथ्वी पर आने वाली ऊष्मा का 6 प्रतिशत अंश वायुमंडल में परावर्तित हो जाता है। इसी प्रकार इसका 27 प्रतिशत अंश बादलों द्वारा तथा 2 प्रतिशत अंश पृथ्वी की सतह द्वारा परावर्तित हो जाता है। इस प्रकार सौर ऊष्मा का 35 प्रतिशत अंश सीधे परावर्तित हो जाता है तथा 65 प्रतिशत अंश में से 14 प्रतिशत अंश वायुमण्डलीय गैसों द्वारा अवशोषित हो जाता है। शेष 51 प्रतिशत ऊष्मा पृथ्वी की सतह को प्राप्त हो जाती है। यह ऊष्मा धीरे–धीरे अवरक्त विकिरण के रूप में वायुमंल से निकल जाती है। पिछले वर्षो में अवशोषण और परावर्तलन की इस प्राकृतिक क्रिया में ऊष्माशोषी गैसों की मात्राा में वृद्वि के कारण असंतुलन की स्थिति बन गयी है। जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी का वातावरण हरित गृह का रूप लेता जा रहा है। कार्बन डाई ऑक्साईड, मिथेन, क्लोरो फ्रलोरो कार्बन, नाईट्रस आक्साईड जैसी गैसें पृथ्वी के वातावरण में ग्रीन हाऊस प्रभाव उत्पन्न कर रही हैं। ये ऊष्मारोधी गैसे पृथ्वी की सतह के चारो ओर एक घना आवरण बना लेती हैं जिससे धरती की सतह से होने वाली विकिरण की प्रक्रिया में वृद्वि होती है। फलतः पृथ्वी के तापमान में वृद्वि होती है। अतः कहा जा सकता है कि भूमंडलीय तापन/ग्लोबल वार्मिंग मुख्यतः वायुमण्डल में ग्रीन हाऊस गैसों की बढ़ती सान्द्रता का परिणाम है।

भूमंडलीय ताप में वृद्वि के कारण
भूमंडलीय ताप में हो रही वृद्वि का प्रमुख कारण वायु प्रदूषण है। जो पर्यावरण की सबसे बडी समस्या है। कार्बन डाई आक्साईड तथा कार्बन मोनो आक्साईड गैस (47) प्रतिशत वायु प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है। इन गैसों की कुल मात्राा 42 प्रतिशत यातायात के साध्नों से वायुमंडल में आता है। विश्व में कार्बन डाई आक्साईड CO_2 की 36 प्रतिशत कोयले से निकलती है।

भारत में ऊर्जा 50 प्रतिशत कोयले से, 32 प्रतिशत तेल, 15 प्रतिशत प्राकृतिक गैसों, 2 प्रतिशत जल ऊर्जा तथा 1 प्रतिशत परमाणु से प्राप्त की जाती है। वर्तमान समय में विश्व में प्रतिवर्ष लगभग 7 करोड हेक्टेयर भूमि से वनों का विनाश हो रहा है जिसके कारण प्रतिवर्ष दो अरब टन अतिरिक्त कार्बन डाई आक्साईड वायुमंडल में आ रही है। अतः वनों के विनाश से ग्रीन हाऊस प्रभाव को बढ़ावा मिल रहा है। इसी प्रकार औद्योगिकरण के बढ़ने से कार्बन की उत्सर्जन दर में वृद्वि हो रही है। वर्ष 1972 में संयुक्त राष्ट्र के स्टॉकहोम सम्मेलन में औद्योगिकरण के बढ़ने से बढ़ती कार्बन की उत्सर्जन दर पर कापफी चिंता जताई गई थी। आंकडे बताते हैं कि 1950 में जीवाश्म ईंधन से कार्बन के प्रतिवर्ष उत्सर्जन की दर जहां सिर्फ 1.6 बिलियन टन थी वह वर्ष 1970 में 2.2 बिलियन टन तथा वर्ष 2000 में 6.5 बिलियन टन पंहुच गयी। अतः औद्योगीकरण, कृषि तथा यातायात के साध्नों द्वारा ग्रीन हाऊस गैसों तथा अन्य गैसो में वृद्वि होने के कारण भूमंडलीय तापमान में लगातार वृद्वि हो रही है। आंकडों से स्पष्ट है कि विश्व की कुल उत्सर्जित कार्बन डाई आक्साईड ब्व2 का 22 प्रतिशत उत्सर्जक अमेरिका है जबकि 17 प्रतिशत चीन, 16 प्रतिशत रूस, 4.7 प्रतिशत जापान, 4.1 प्रतिशत भारत, 1.4 प्रतिशत आस्ट्रेलिया तथा 17.2 प्रतिशत यूरोप कार्बन डाई आक्साईड का उत्सर्जन कर रहे हैं।

2 फरवरी 2007 को जारी जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (आई0पी0सी0सी0) की चौथी रिपोर्ट ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वर्तमान में बढ़ रहे तापमान के लिए मनुष्य स्वयं जिम्मेदार है इस रिपोर्ट ने यह सिद्ध कर दिया है कि वायुमंडल में प्रकृति विरोधी गतिविधियों द्वारा मानव ने हरित गृह गैसों की मात्राा को बहुत अधिक बढ़ा दिया है।

भूमंडलीय तापमान में वृद्वि का प्रभाव

भूमंडलीय तापमान में वृद्वि होने के कारण मौसमी बदलाव हो रहे हैं। 'नेचर' पत्रिका ने स्पष्ट किया है कि अमेरिका में चक्रवातों (हरिकेनद्ध की बारम्बारता का बढ़ना भी भूमंडलीय ताप में वृद्वि का ही परिणाम है। बढ़ते तापमान के कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं। हिमालय के ग्लेश्यिर प्रतिवर्ष 8 से 64 मीटर की दर से सिकुड रहे हैं। वास्तव में अब वैश्विक स्तरों पर हिमनदों पर खतरा मंडराने लगा है। ग्लेशियर पिघलने से समुद्र का जलस्तर बढ़ेगा। ऐसा अनुमान है कि समुद्र के जलस्तर में महज 4 इंच की वृद्वि से जापान, चीन, पिफजी, इण्डोनेशिया, मालदीव, मॉरीशस, श्रीलंका, फिलीपींस एवं न्यूजीलैण्ड आदि देशों के कई द्वीप जलमग्न हो जायेंगे। आई0पी0सी0सी0 के अनुसार यदि विश्व की जलवायु इसी प्रकार गर्म होती रही तो वर्ष 2100 तक पूरा मालदीव देश समुद्र में डूब जायेगा। भूमंडलीय ताप में वृद्वि से सम्पूर्ण विश्व संकट में है। विश्व में आज भूमंडलीय ताप वृद्विसे प्रभावित 20 हॉट स्पॉट्स को चिन्हित किया गया है। इनमें उत्तरी अमेरिका में ग्रीनलैण्ड, रॉकीज पर्वत, अलास्का व टेक्सॉस प्रमुख हैं। वेनेजुएला में 1982 में 6 हिमनद थे वर्तमान में जिनमें से केवल 2 बचे हैं। वे भी आगामी 10 वर्षों में समाप्त हो जायेंगे। ऐसी सम्भावना है कि एशिया एवं ओशोनिया में हिम पिघलने के साथ ही सागर तल बढ़ने से तटीय क्षेत्रा भी संकट में हैं।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के सौ वैज्ञानिक के दल के द्वारा शोध कर प्रकाशित पुस्तक 'स्टेनिंग लाईफ' में स्पष्ट किया गया कि भूमंडलीय ताप में वृद्वि से दुनिया में जीवों की 6000 प्रजातियां संकट में हैं। दुनिया का विस्तृत डेलटाई क्षेत्र सुन्दरबन भी खतरे में है। भारत में भी वनस्पतियों एवं जीव जन्तुओं की 25 प्रतिशत प्रजातियां सन् 2030 तक विलुप्त हो जायेंगी, ऐसा अनुमान है।

वर्ल्ड वाईल्ड पफोरम की रिपोर्ट के अनुसार अंटार्कटिका की 40 प्रतिशत बपर्फ कम हो चुकी है तथा विश्व बैंक के अधिकारियों व वैज्ञानिकों के अनुसार ध्रती का तापमान बढ़ने के कारण इस सदी के अंत तक दक्षिण एशिया की खाद्यान्न उत्पादन क्षमता समाप्त हो सकती है।

धरती का तापमान बढ़ने से मानव स्वास्थ्य भी प्रभावित हो रहा है। बिमारियों में वृद्वि हो रही है। त्वचा हृदय, मस्तिष्क तथा आंख कान पेट से सम्बंधित कई बीमारियां अप्रत्याशित रूप से बढ़ जायेंगी। स्वच्छ जल की उपलब्ध्ता कम हो रही है। सन् 2050 तक बढ़ते हुए तापमान के कारण प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता में 30 प्रतिशत कमीं आने का अनुमान है। बाढ़ एवं सूखा बढ़ रहे हैं सूखे से प्रतिवर्ष 4 मिलियन लोगों की मौत हो रही है। बढ़ते तापमान के कारण तूफान व लू में भी बढ़ोत्तरी हुई है, जिससे मानव जीवन प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो रहा है। आई0पी0सी0सी0 के अनुसार, पिछले सौ सालों में पृथ्वी का तापमान 0.740 सेल्सियस बढ़ा है जबकि सन् 1970 से अब तक 0.40 सेल्सियस बढ़ा है भारत 0.60 सेल्सियस प्रति सौ वर्ष की दर से गर्म हो रहा है। हिमालय का ताप सन् 1970 से अब तक 10 सेल्सियस बढ़ा है जिससे गंगोत्री ग्लेशियर 98 फीट प्रति वर्ष पिघल रहा है। जिससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि 2035 तक हम गंगोत्री ग्लेशियर को खो देंगे। इसके अतिरिक्त भारत के सुन्दर बन क्षेत्र में जल स्तर 5.5 मिली मीटर की दर से बढ़ रहा है। जिससे 18,500 एकड भूमि जल मग्न हो जाने की सम्भावना है। बढ़ते तापमान से भारतीय मानसून की प्रकृति भी बदल रही है जिसके कारण भारतीय कृषि भी प्रभावित हो रही है। बढ़ते तापमान से पफसलों की उत्पादकता का घटना तथा रोगग्रस्त में वृद्वि होना शामिल है। सन् 2100 तक पफसलों की उत्पादकता में 10–40 प्रतिशत कमीं आने का अनुमान है। उच्च तापमान से गेंहू व चावल की उपज घटेगी तथा महाराष्ट्र, गुजरात एवं कर्नाटक में कृषि अधिक प्रभावित होगी। जलवायु परिवर्तन से केवल पफसलों का उत्पादन ही नहीं बल्कि उनकी गुणवत्ता पर भी नकारात्मक प्रभाव पडेगा। अनाज में पोषक तत्वों और प्रोटीन की कमीं पाई जायेगी। जिसके कारण संतुलित भोजन लेने पर भी मनुष्यों का स्वास्थ्य प्रभावित होगा। इसी प्रकार तापमान बढ़ोत्तरी का फसलों और पेड पौधे के साथ साथ जानवरों पर भी प्रभाव पडेगा। अनुमान है कि तापमान वृद्वि से जानवरों के दुग्ध उत्पादन में सन् 2020 तक 1.6 करोड टन तथा 2050 तक 15 करोड टन तक की गिरावट आ सकती है। इसी प्रकार कृषि के अन्य घटकों की तरह मिट्टी भी बढ़ते तापमान से प्रभावित होगी। अब तापमान बढ़ने से मिट्टी नमीं और कार्यक्षमता प्रभावित होगी। मिट्टी में लवणता बढ़ेगी और जैव विविध्ता घटती जायेगी। भूमिगत जल के स्तर का गिरते जाना भी इसकी उर्वरता को प्रभावित करेगा। बाढ़ जैसी आपदाओं के कारण मिट्टी का क्षरण अध्कि होगा वहीं सूखे की वजह से इसमें बंजरता बढ़ती जायेगी। अतः सच्चाई यह है कि बढ़ते भूमंडलीय तापमान से हवा, पानी, खेती, भोजन, स्वास्थ्य, आजीविका आदि सभी पर प्रतिकूल प्रभाव पडेगा। इस प्रकार बढ़ते भूमंडलीय तापमान के दुष्परिणामों ने हम सभी के लिए खतरे की घंटी बजा दी है। इस समस्या से निपटने के लिए वैश्विक प्रयास जारी हैं।

भूमंडलीय ताप – वैश्विक प्रयास

1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सबसे पहला कदम स्टॉकहोम सम्मेलन के तहत उठाया गया। इस सम्मेलन के बाद भारत में 'प्रोजेक्ट टाईगर' चलाने का निर्णय लिया गया और वायु प्रदूषण सम्बंध्ति कानून बनाये गये। इसी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का जन्म हआ। 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाने की घोषणा भी इसी सम्मेलन में की गई।

अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से रियो डि–जेनेरिया (1992) सम्मेलन आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में 'एजेड़ा 21' नामक कार्यक्रम निर्धरित किया गया। इस सम्मेलन में विभिन्न देशों को चार क्षेत्रों – (1) विश्वव्यापी

तापमान में वृद्वि रोकने, (2) ओजोन संरक्षण, (3) जैव विविध्ता संरक्षण, (4) जलसंरक्षण कार्यक्रम चलाने में सहायता देने की बात कही गयी।

भूमंडलीय तापमान नियंत्राण के उद्देश्य से जापान में 'क्योटो' में 11 दिसम्बर 1977 में एक सम्मेलन में 38 विकसित देशो से सामूहिक रूप से ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन को 1990 के स्तर पर लाने के लिए 2012 तक 5.2 प्रतिशत कटौती करने की प्रतिब(ता व्यक्त की गई। इसका लक्ष्य छः ग्रीन हाऊस गैसों, कार्बन डाई ऑक्साईड (CO_2) नाईट्रस आक्साईड (N_2O) मिथेन (CH_4) हाईड्रोफ्रलोरोकार्बन (HFC) परफ्रलोरोकार्बन (CF_4) एवं सल्फर हेक्सा फ्रलोराईड (CF_6) के उत्सर्जन में कमीं करना है।

इसके पश्चात् इसी दिशा में एक प्रमुख प्रयास जोहान्सबर्ग सम्मेलन 2002 में सतत् विकास हेतु पृथ्वी 10 सम्मेलन का आयोजन किया इसमें रियो–के–एजेडा 21 के कार्यान्वयन की 10 वर्षीय (1992–2002) की समीक्षा की गई।

28 नवम्बर – 9 दिसम्बर 2005 में मांट्रियल ;कनाडाद्ध में संयुक्त राष्ट्र संघ का 11 वां जलवायु परिवर्तन सम्मेलन हुआ, इस सम्मेलन में विकसित देशों द्वारा 2012 तक अपने यहां ग्रीन हाऊस गैसों में वर्ष 1990 के स्तर को पाने के लिए इनके उत्सर्जन में 25–40 पफीसदी कटौती करने के लिए एक पर्यावरण कोष बनाने तथा विकसित तकनीक हस्तांतरण करने पर सहमति बनी।

30 अप्रैल से 4 मई 2007 में थाईलैण्ड की राजधनी बैंकाक में सम्पन्न जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में वैज्ञानिकों ने कहा के पृथ्वी के बढ़ते तापमान और जलवायु परिवर्तन से आए संकट को टालने के लिए अगले 50 वर्षों में ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन में 85 प्रतिशत तक भारी कटौती करनी होगी।

3.14 दिसम्बर 2007 में इण्डोनेशिया के बाली द्वीप के नुसा–दुआ में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया गया। बाली सम्मेलन का मुख्य वर्ष 2009 में होने वाले कोपेहेगन सम्मेलन के दौरान एक अंर्तराष्ट्रीय सन्धि के लिए रोडमैप तैयार करना था जो वर्ष 2012 में क्योटो प्रोटोकॉल का स्थान लेगी इसे 2013 से लागू किया जायेगा।

भूमंडलीय ताप में वृद्वि के निवारक उपाय

विभिन्न संध्यिों में उल्लेखित शर्तों का सभी विकसित एवं विकासशील देशों द्वारा कडाई से अनुपालन भूमंडलीय तापमान में वृद्वि को रोकने में कापफी सहायक सिद्ध हो सकता है किन्तु इसके कई अन्य निवारक उपायों को, विभिन्न देशों की सरकारें, अपने देश की नीतियों में शामिल कर सकती है।

1. वृक्षारोपण

वृहत स्तर पर वृक्षारोपण द्वारा भूमंडलीय तापमान वृ(पर कापफी हद तक नियंत्राण प्राप्त किया जा सकता है। वैज्ञानिकों के अनुसार 120 मिलियन हेक्टेअर का वन क्षेत्रा प्रतिवर्ष 780 मिलियन टन कार्बन डाई ऑक्साईड का अवशोषण कर सकता है। इससे स्पष्ट है कि यदि भूमंडल पर वनाच्छादित क्षेत्रों की वृद्वि कर दी जाये जो मानवीय क्रिया कलापों द्वारा उत्सर्जित कार्बन डाई ऑक्साईड गैस की बडी मात्राा को प्राकृतिक रूप से समाप्त किया जा सकता है।

2. सौर ऊर्जा

जीवाश्म ईंध्न के प्रयोग की अपेक्षा सौर ऊर्जा का उपयोग पर्यावरण की वृ(की दृष्टि से अध्कि लाभकारी है। खासतौर पर ऐसे गांवों में जहां लोग प्रकाश के लिए कैरोसीन लैम्पों का इस्तेमाल करते हैं जिनमें 95 प्रतिशत ऊर्जा व्यर्थ व्यय हो जाती है। यदि छोटे–छोटे फ्रलुओरो सेंट लैम्पों या सौर सेलों द्वारा अर्जित रोशनी देने वाले डायोड इस्तेमाल किये जाऐं तो गैस उत्सर्जन में भारी कमीं की जा सकेगी। अतः विकसित व विकासशील देशों को अपने अपने देश में सौर ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहन देना चाहिए। इससे जीवाश्म का उपयोग घटेगा

3. बायो गैस के उपयोग का विस्तार

विकासशील देशों में तथा अल्पविकसित देशों में प्रायः भोजन बनाने तथा अन्य कार्यों के लिए लकडी, गोबर के उपले इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। इससे कार्बन डाई ऑक्साईड का उत्सर्जन होता है। अतः इसके स्थान पर बायो गैस के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त यदि खाना पकाने के किए कार्यकुशल चूल्हें तैयार करके गरीबों को दिये जाऐं और जलाने की लकडी की जगह एलपीजी को 50 प्रतिशत से भी ज्यादा कार्यकुशलता वाले चूल्हों में जलाया जाए तो गैस उत्सर्जनों में भारी कमीं की जा सकेगी।

भारत की स्थिति

भूमंडलीय तापमान वृद्वि पर अर्न्तराष्ट्रीय चिंता में शामिल भारत ने 1992 में मांट्रियल प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किये थे। 1998 में देश के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा ओजोन नष्ट कारक पदार्थ अधिनियम, 1998 बनाया गया। इस अधिनियम में (क) ओजोन नष्ट कारक पदार्थों के उत्पादन, निर्यात, आयात हेतु पर्यावरण मंत्रालय से लाइसेंस आवश्यक किया गया। (ब) ओजोन नष्ट कारक पदार्थों के उत्पादन सम्बंधी प्रक्रियाओं को समाप्त करने हेतु समय सीमा तय की गयी।

अतः स्पष्ट है कि भारत सरकार की स्वेच्छा से ग्रीन हाऊस उत्सर्जन में कमीं लाने का प्रयास रही है। इसी कडी में भारत ने 18 नवम्बर 2009 को वायु प्रदूषण के मानकों को यूरोपीय यूनियन की भांति कडा बुना दिया है। इन नये मानकों से भारत में कुल ग्रीन हाऊस गैसों का उत्सर्जन घटेगा। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय जल स्वास्थ्य इंजीनियरी अनुसंधान के वैज्ञानिकों ने जल व वायु प्रदूषण को रोकने के लिए अनेक सुझाव दिये हैं। कारखानों एवं खानों में प्रदूषण को रोकने के लिए उपायों पर औद्योगिक विष विज्ञान संस्थान (लखनऊ) तथा राष्ट्रीय संस्थान अहमदाबाद में अनुसांधन कार्य गम्भीरतापूर्वक किया जा रहा है।

अतः यह आवश्यक है कि भूमंडलीय ताप में कमीं करने के लिए सर्वप्रथम वायुमंडल में हानिकारक गैसों के सांद्रण को कम करना जरूरी है।

निष्कर्ष

आज विकसित और विकासशील देशों के मध्य हानिकारक गैसों के उत्सर्जन की मात्राा को कम करने के प्रश्न पर एक द्वन्द्व की स्थिति बनी हुई है। आंकडों से स्पष्ट है कि कार्बन डाई ऑक्साईड के उत्सर्जन में अमेरिका का हिस्सा लगभग 22 प्रतिशत है। इसी प्रकार चीन का 17 प्रतिशत, रूस का 6 प्रतिशत तथा यूरोपीय देशों का 17.2 प्रतिशत है। हम सभी जानते हैं कि औद्योगिकरण का कार्य विकसित देशों में तीव्रता से हुआ है। प्रायः पिछले सभी सम्मेलनों और बैठकों में विकसित देश इस जिम्मेदारी से बचने का प्रयास करते हैं और विकासशील देशों को ही दोषी ठहराते हैं। यह वास्तव में निंदनीय है। आज सभी देशों को अपने निजी हितों को त्यागकर वैश्विक हित पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। सभी देशों को एकजुट होकर इस समस्या पर काबू पाने की रणनीति तैयार कर उस पर अमल करना चाहिए ताकि भविष्य में भूमंडलीय ताप में वृद्वि से उत्पन्न समस्याओं से निपटा जा सके।

सन्दर्भ सूची

1. दत्त एवं सुन्दरम 'भारतीय अर्थ व्यवस्था '
2. बी.के पुरी, एस.के. मिश्रा, 'भारतीय अर्थव्यवस्था'
3. प्रतियोगिता दर्पण, दिसम्बर 2008
4. कुरूक्षेत्र, मई 2001

5. प्रतियोगिता दर्पण, अप्रैल 2009
6. प्रतियोगिता दर्पण, फरवरी 2010
7. कुरूक्षेत्र, पफरवरी 2001
8. प्रतियोगिता दर्पण, मार्च 2010
9. www. google.com
10. www.en.wikipedia.com
11. www.globalwarming.com